RIA): I am extremely happy that Shri Bhupesh Gupta is having the same spirit even though placed in these demoralised conditions.

श्री प्रकाशवीर शास्त्री (उत्तर प्रदेश) : उपसभापति महोदय, मैं एक बात आपके माध्यम से निवेदन करना चाहता हू । हमारा यह सौभाग्य है कि हमारे जो कृषि मंत्री, श्री प्रकाश सिह बादल है, वह स्वयं एक किसान है । मैं उनसे यह जानना चाहूंगा कि गहूं की फसल अब किसान के घर में आ रही है . . .

श्री उपसभापति : इसके बारे मे इस समय आप कुछ नही कह सकते . . .

श्री प्रकाशवीर शास्त्री : मैं तो केवल . .

श्री उपसभापति : नियमानुसार आप नहीं बोल सकते । कृपया . . .

श्री प्रकाशवीर शास्त्री : मैं सिर्फ इतना चाहता हूं कि वह सदन में यह बताने की कृपा करें कि गहूं का वसूली मूल्य क्या होगा ।

श्री उपसभापति : हर एक बात कहने के कुछ नियम होते है ।

SHRI V. B. RAJU (Andhra Pradesh): I think seating arrangement is made in this House and I hope a seat has been fixed for the Prime Minister also. I think the convention in this House is that when the Prime Minister is not in the House, his seat may be left vacant. It is only just for the purpose of tradition.

REFERENCE TO ALLEGED INTIMIDATION OF M.L.As. IN GUJARAT BY THE JANATA PARTY

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Special Mention, Shri Yogendra Makwana.

SHRI YOGENDRA MAKWANA (Gujarat): Sir, I request you to permit me to mention the call given by the Secretary of the Janata Party in Gujarat, Shri Braham Kumar Bhatt, to Congress MLAs either to go back to the Janata Front or face the people and thereby attempts are being made to intimidate the elected representatives of the people on the lines of the previous Navnirman movement of 1974 in Gujarat.

Sir, after the last motion of no confidence in the Gujarat Assembly on the 28th March, 1977, they tried to coerce the MLAs of the Congress Party. In frustration, the Janta Party leaders tried to demonstrate at the houses of several MLAs and they threatened them with the kidnapping of their sons and daughters, as was done in the previous Navnirman movement. Recently, one MLA was threatened by the son-in-law and his relatives that his daughter would be divorced if he did not leave the Congress Party. This thing has started in Gujarat. A number of MALs have been threatened and their families have been threatened by the Janata Party workers and the mob. Sir, those who cry in the name of democracy every now and then have started mobocracy in the name of democracy in Gujarat.

Leaders of the Janata Party always profess that they follow democracy. But I would specially like to know what sort of democracy are they following in Gujarat—whether they are following the Gandhian path or the Fascist democracy propagated by Hitler in Germany. The tactics which they have adopted for coercing Congress MLAs and their families in Gujarat are nothing but a Fascist method of coercing them and asking them to resign. Sir, during 1974, the MLAs, the elected representatives of the people, were forcibly asked to resign from the party and its membership. Now again, the same tactics have been started by the Janata Front leaders in Gujarat. The Chief Minister of Gujarat has issued a statement which appeared in the 'Times of India' on the 28th March, I was there in Gujarat and I attended

[Shri Yogendra Makwana]

the Legislative Assembly meeting. After the meeting was over and after the motion was thrown out, the MLAs were threatened and some of them were even manhandled; some were beaten outside the Assembly Hall and one of the leaders of the Janata Front threatened that their families and other members will also be coerced.

Sir, I wanted to mention this in this House as it is in the interest of the public and in the interest of democracy.

REFERENCE TO ALLEGED ATTACK ON HARIJANS AND AGRICULTURAL LABOURERS DURING THE RECENT GENERAL ELECTIONS

श्री भोला प्रसाद (बिहार) : उपसभापति महोदय, गत जनरल इलेक्शन के बाद अखबारों में समाचार आ रहे हैं कि खास तौर से हरिजनों और खेत-मजदूरों के ऊपर भूस्वामियों के हमले, कातिलाना हमले, हो रहे हैं, इसलिए कि जहां पर हरिजनों ने हिम्मत की स्वेच्छा से किसी उम्मीदवार को वोट देने की और जहां भूस्वामियों के आदेश के मुताबिक अगर किसी ने वोट नहीं दिया तो चुनाव खत्म होने के बाद ही जो रिजल्ट निकले हैं, हरिजनों के ऊपर इस तरह के हमले हो रहे हैं। 29 तारीख का यह पैट्रियट अखबार है जिसमें कि "फोर हरिजन्स किल्ड इन् आन्ध्र" यह समाचार है, फिर 30 तारीख का यह "जनयुग" मेरे हाथ में है, इस दैनिक समाचार-पत्र ने जो लिखा है उसको में कोट कर देना चाहता हूं :

"लोक सभा चुनाव में जनता पार्टी की जीत, साथ ही खास कर देहाती क्षेत्रों में निहित स्वार्थों ने हरिजनों पर हमले शुरु कर दिये हैं जिससे उन क्षत्रों में तनावपूर्ण स्थिति उत्पन्न हो गयी है। चुनाव के बाद आंध्र प्रदेश के रायलसीमा क्षेत्र में भूस्वामियों ने हरिजनों तथा पिछड़े वर्ग के लोगों पर घातक हमले कर दिये जिसके फलस्वरूप चार लोगों की जानें गयी और अनेक लोग घायल हो गये।

हाल ही में पन्याम तालुक के कोठापल्ली गांव में भू-स्वामियों ने हरिजनों की बस्ती पर हमला कर दिया जिसके फलस्वरूप दो लोगों की जाने गयी। उन्होंने फिर पिछड़े वर्ग के दो लोगों की भी हत्या कर दी। इसी तरह कर्नूल जिले के नंदीकोटकर तालुक के कई गांवों में भूस्वामियों ने हरिजनों तथा अन्य पिछड़े वर्ग के लोगों पर घातक हमले किये। कई जगह तो हरिजनों ने सफल प्रतिरोध भी किया। समझा जाता है कि इन हरिजनों ने भूस्वामयों की इच्छा के अनुरूप वोट नहीं डाले। चुनाव के दौरान भी इन हरिजनों को डराया धमकाया गया तथा उन्हें मतदान के केन्द्रों तक जाने से रोका गया।

इसी तरह बिहार के ग्रामीण इलाकों में भी भूस्वामीयों ने प्रतिशोध की भावना से हरिजनों तथा दूसरे पिछड़े समुदाय पर हमला शुरू कर दिया है। इन भूस्वामियों ने कई कम्युनिस्ट कार्यकर्त्ताओं को भी अपने हमले का शिकार बनाया। हाल ही में रोहतास जिले के करगहर थानान्तर्गत बकसारा गांव में भूस्वामियों ने हरिजन व कम्युनिस्ट कार्यकर्त्ताओं शशिकुमार राम, लाल बहादुर राम तथा मन्नूराम को गोली मार कर हत्या कर दी और जला दिया। चुनाव के तुरन्त बाद ही नालंदा जिला के हिल्सा थाने में सामंतों ने कम्युनिस्ट कार्यकर्त्ताओं—राजदेव प्रसाद, बाबूचंद पासवान तथा माहवीर बल्दा की निर्मम हत्या कर दी।"

उपसभापति महोदय, इसी तरह की घटनाओं के दूसरी जगहों पर होने के और भी